चौधरी देवी लाल, मुख्य मन्त्री, हरियाणा को दिनांक 10 मार्च, 1989 लिखे गये पत्र की प्रति।

कल सुबह आपसे खुली बात करने के लिए समय लिया गया था। काफी दिनों से यह इच्छा थी कि आप से खुली बात हो, चुनाचे मैंने इस प्रकार शुरु की :-

मैं पिछले दिनों से धर्म संकट से गुजर रहा हूं। मगर इसकी चर्चा बाद में करूंगा। पहले हरियाणा में जो कुछ हो रहा है, उसकी बाबत अपनी असैसमैंट **Assessment** बताना जरुरी समझता हूं। जो कुछ मैंने कहा उसका निचोड़ इस प्रकार है -- "हरियाणा से बाहर आपकी बेहद इज्जत है। बूढ़ों की पैंशन, कुछ कर्जों की माफी और अब कुछ बेरोजगारी भत्ते की स्कीमों से गरीब लोग आपको मसीहा समझने लगे हैं। विरोधी पक्ष की एकता के लिए जिस दिलेराना व ढ़ंग से आप ने काम किया, उससे आपकी गिनती चोटी के राष्ट्रीय नेताओं में होने लगी है और हरियाणा वासियों की तरह मुझे भी इसका गर्व है। 15,10 88 की अपनी डायरी में मैंने ऐसा लिखा भी था। दूसरे प्रदेशों में आपकी लोकप्रियता चोटी पर है मगर हरियाणा में हालात इसके उल्ट होते जा रहे हैं। बन्सीलाल के भिवानी जलसे की अनुपम हाजरी इसका प्रमाण माना जाये तो गल्त न होगा। आज हालात यह है कि बहुत कम पंजाबी, महाजन, ब्राहमण, बाल्मिकी और धानक हमें वोट देंगे। हालाँकि इन बिरादरियों के बुढ़ों की पैंसन तथा दूसरे काम उसी तरह हुऐ हैं जैसे और बिरादरियों के। इन बिरादरियों के लोग अपने मन्त्रियों को नामर्द कहने लगे हैं। उनका यह ख्याल हो गया है कि निजि कामों में उनको न्याय नहीं मिलता। इन बिरादरियों के कर्मचारियों से भी खुली दुभात हो रही है।

भ्रष्टाचार का कोई ठिकाना नही रहा। कितनी जगह ऐसे अफसर उभर आऐं हैं, जो धींगपने से मनमानी करते हैं और रिश्वत लेते हैं तथा लोगों को बेइज्जत अलग करते हैं। मैंने कुछ ऐसे अफसरान और एक-दो मन्त्री का नाम भी लिया था। एक अच्छे अफसर का नाम भी लिया जिसे इसलिये अपनी जगह से हटा दिया गया कि वह अपने विभाग में धांधलियों को रोकने का प्रयास कर रहा था।

ये सारी बातें लगातार नहीं कही गई। कई बातें आपके स्वालात व रिमार्कस के जवाब में कही गई, मगर अभी ना तो मैं श्री सत्यदेव, रिटायर्ड एस० पी० द्वारा बताई गई बातें चर्चा कर सका था और ना ही अफसरान, खास तौर पर भ्रष्ट अफसरान द्वारा तरह-तरह का चन्दा वसूली, का और ना ही अपने धर्म संकट का, कि आपने श्री सक्सैना, पत्रकार को आवाज दे दी। स्पष्ट है कि आपने मेरी बातों को पसन्द नही किया। हालाकि यह जरुर कहा कि प्रशासन को चलाने के लिए तीन सीनियर मन्त्रियों की एक कमेटी मुकरर कर दी है जो अब प्रशासन चलायेगी और आप सारे भारत में, मय हरियाणा, मे कांग्रेस के खिलाफ जनमत तैयार करेंगे।

आपने मेरा धर्म संकट जानना भी नही चाहा। इसमें मुझे मायुसी हुई और मुझे लगा कि अब मैं आपके लिए अनुपयुक्त **(irrelevant)** हो गया हूँ। शायद मेरा उपयोग केवल कास्मैटिक रह गया है। यदि यह बात दुरुस्त है तो मेरी आत्मा कहती है कि मुझे आपके रास्ते से हट जाना चाहिए। मैं केवल कास्मैटिक रोल अदा नही कर सकता। ना ही इस रोल के लिए मुझे बुलाया गया था।

शायद आप इतफाक करें कि मैं आपके साथ किसी ओहदे या किसी और लालच के लिए नही लगा था। जून 87 के चुनाव से बहुत पहले मैंने ऐलान कर दिया था कि मैं चुनाव नही लड़ूंगा फिर भी राजीव- लोगोंवाल समझौते के खिलाफ संघर्ष में पूरा हिस्सा लिया। पार्टी की जीत के बाद दिल्ली में आपने बतौर सी० एम० शपथ ली तो मैं जान-बूझकर शामिल नही हुआ कि कहीं किसी ओहदे का उम्मीदवार का समझा जाऊं। आपने बुलाया तो उपाध्यक्ष, योजना बोर्ड की भारी जिम्मेवारी सम्भाल ली। में नही जानता कि मेरे काम का आप पर क्या असर है ? मैं सिर्फ इतना कह सकता हूँ कि आपकी छवि उभारने के लिए मैंने तन-मन से काम किया और अपनी वकालत के जमाने से भी कहीं ज्यादा मेहनत की ताकि कांग्रेसी और आपके अन्य शत्रु आप पर यह आरोप ना लगा सकें कि आप और हम सबको सरकार नही चलानी आती।

हम दोनों के कुछ लक्ष्य सांझे थे। हमने सन् 47 में हासिल-की आजादी को मंजिल नही, पड़ाव समझा था। मंजिल तो देश के गरीबों की सामाजिक व आर्थिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति है। इस मंजिल पर पहुँचने के लिए संघर्ष चाहिये तभी गरीब किसानों और मजदूरों का शोषण खतम होगा।

downloaded from moolchandjain.org

मगर मैंने देखा कि देश की सबसे गरीब जनता में संघर्ष और संगठन की शक्ति अभी नहीं है। किसानों की हालत कदरे बेहतर है। उनमें अगला संघर्ष लड़ने की शक्ति है बशरते के उनको ठीक तरह से संगठित किया जाए। वो शक्ति मैंने चौ० चरण सिंह और आप में देखी। इसलिए मैं आप दोनों का हमसफर बन गया। इसके लिए मैंने न अपनी बिरादरी की गालियों की प्रवाह् की और ना ही ना समझ साथियों के उन तानों की-- , '' कि जैन साहब के पास एक वोट भी नही, वैसे ही लीडर बने फिरते हैं ...

कमी सभी इन्सानों में होती है। चौधरी चरण सिंह जी में भी थी। ईर्ष्या के कारण वे गुणों की बजाये कमियां देखने लगे। सन् 82 के चुनाव से पहले मुझे हरियाणा का सी० एम० बनाने का इशारा देने के बावजुद मैं उनकी बजाय आपके साथ रहा। इसके कई कारण थे :-

इन कारणों में सबसे प्रमुख यह था कि हरियाणा में मैं आपके अलावा किसी और में किसानों को संगठित करने और हरिजनों आदि को भी साथ लेने की शक्ति नहीं देखता था। दूसरे 'भ्रष्टाचार बन्द' और लोकराज 'लोकलाज से चलता है', आपके इन नारों से भी मैं प्रभावित था। आपके हरिजन चौपालों के प्रोंग्राम और दिसम्बर 78 में प्रधान मन्त्री मुरारजी भाई को आपके इस जवाब ने कि "मैं किसान पहले हूं और मुख्य मन्त्री बाद में" भी मोह लिया था।

इसलिए संघर्ष में आपके साथ रहा और जीत के बाद भी जून 87 में आपके बुलाने पर जिम्मेवारी कबूल की थी। इसलिए भी कि आपकी सरकार कामयाब हो। उसको सफल बनाने के लिए जो कुछ मैं कर सकता था किया। योजना बोर्ड की पिछली मिटिंग में आपने स्वयं दोर्ड के काम की सराहना यह कह कर की थी कि योजना बोर्ड कैबिनेट से भी ज्यादा अहम सवाल डील कर रहा है।

लेकिन अब मैं देख रहा हूँ कि "लोकराज लोकलाज से चलता है" को मापने की कसौटी आपकी और मेरी अलग-अलग होती जा रही है। पुत्र मोह के कारण हरियाणा के सभी निवासियों को एक आँख से नही देखा जा रहा। भ्रष्टाचार बन्द होने की बजाय बढ़ रहा है। प्रशासन और अच्छे कार्यकर्ता demorelized हैं। माफिये का जोर बढ़ रहा है जिसके कारण जगह-जगह कीमती जायदादों पर नाजायज कब्जे हो रहे हैं और हमारी सरकार बदनाम हो रही है।

इन्ही बातों का परिणाम है कि बन्सीलाल आदि के जलसों में बेहद हाजिरी होंती जा रही है। कितने अच्छे साथियों ने मुझसे कहा है कि यही हालात जारी रहे तो आने वाले लोकसभा चुनाव में हमारी कामयाबी बहुत मुश्किल हो जायेगी। मैं इस अन्ताजे से सहमत हूँ। खेद यह है कि मैं इन हालात को सुधारने में स्वयं को बेबस पाता हूं। पहले आप मेरी बातों पर ध्यान देते थे। एक बार आपने यहां तक कहा कि मैं ओमप्रकाश को समझाऊं। मैंने तुरन्त जवाब दिया था कि उसे मेरे पास भेजें। वो नही आया। मुझे उससे कोई द्वेष नही है। लेकिन मुझे लगा उसमें बहुत अहंकार हो गया है। आपका साथी और हम उमर होने के नाते हरियाणा जनता दल का प्रधान नामजद होने पर वह आशीर्वाद के लिए मेरे पास आता तो मैं न केवल आशीर्वाद देता बल्कि उसे समझाता कि अहंकार अवगुणों का राजा है। अहंकार इन्सान के गुणों को ढ़क लेता है। जबकि नम्रता से अवगुण छिप जाते हैं। उसके अहंकार और कुछ अन्य कमियों के कारण काफी विधायक भी नाराज रहते हैं। शायद मेरे समझाने का कुछ असर होता।

हरियाणा के कितने लोग यह समझने लगे हैं कि मैं आपके बड़े सलाहकारों में हूं। दूसरी ओर मुझे यह ख्याल होता जा रहा है जैसा कि मैंने ऊपर लिखा भी है कि अब मैं आपके लिए अनुपयुक्त (irrelevant) हो गया हूँ। यदि यह सत्य है तो हरियाणा के भाई-बहनों को धोखे में कैसे रखु ? अनुपयुक्त हो गया हूं तो जनता को इस हकीकत का इलम होना ही चाहिये।

अपने धर्म संकट की बात कहकर यह लम्बा पत्र खत्म करुगा। धर्म संकट यह है कि उपरोक्त हालात बढ़ते देखकर और आप को बेबस पाकर मैं कई महीनों से त्याग-पत्र देने की सोच रहा था। कई मित्रों से इसकी चर्चा की तो एक-दो को छोड़कर सबने इसका विरोध किया कि मेरी वजह से बदशक्तियां कुछ तो काबू में रहेंगी। अभी मुझे अपने अनुहयुक्त (irrelevant) होने का पूरा अहसास नही हुआ था इसलिए टिका रहा। अहसास होने पर त्याग-पत्र देने का फैंसला किया। 21.2 89 को त्याग-पत्र का मजमून भी लिख लिया मगर फिर सुषमा स्वराज और रमेश कपिला से इसकी चर्चा कर बैठा, तो दोदों ने कहा कि इस मौके पर त्याग-पत्र दिया तो समझा जायेगा कि सी० एम० ने तो मुझ पर विश्वास किया और मेरा त्याग-पत्र उन से विश्वासघात होगा। यही मेरा धर्म संकट बन गया। मैं गहरी सोच में पड़ गया हूं कि जिस देवी लाल में शोषितों को संगठित करने की ताकत को देखकर मैंने चौधरी चरण सिंह के सी० एम० बनाने के इशारे की परवाह न करते हुए, उसका साथ न छोड़ा, आज इतनी आमदनी और सरकारी इज्जत को लात मारने की सोची है तो क्या मुझ पर विश्वासघात का आरोप लग सकता है। अन्दर से आवाज आई कि चौधरी साहब से बात किये बिना त्याग-पत्र दिया तो ऐसे आरोप की गुजाईस है। इसलिए यह रास्ता निकाला कि आप से खुल कर बात करुं।

जो बातें हुई उनकी संक्षेप में चर्चा मैंने शुरु में लिखी है। मैं महसूस करता हूं और कई अन्य साथियों ने भी ऐसा कहा कि कुछ देर के बाद आप वे बातें नही सुनना चाहते हैं जो आपकी पसन्द नही, चाहे आपके सीनियर साथी नेक नीति से महसूस करते हों और फिर प्रनाला प्राय: पहले की तरह ही पड़ता रहता है।

मैं अपने स्वभाव से मजबूर हूं। मैं अनुपयुक्त (irrelevant) का जीवन नही जी सकता। घुटन होने लग गई है बावजूद उस तमाम इज्जत के जो आपने मुझे दी और जिसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं।

इस पत्र को पढ़कर यदि आप इस नतीजे पर पहुँचे कि मैंने अपने को अनुपयुक्त (irrelevance) गलत समझा है तो मुझे विस्तार से बातें करने का मौका दें। धुंऐ के बादल छोड़ने से तो काम नही चलेगा। हमारी सरकार इस काम में एक्सपर्ट होती जा रही है। इसकी कितनी मिसालें दी जा सकती हैं। मगर जनता अब इन्हें पहचानने लगी है। विरोधियों के जलसों में ज्यादा हाजिरी इसका सबूत है। किसी विचारक ने ठीक ही कहा है कि सारी जनता को बहुत देर तक बुद्धु नहीं बनाया जा सकता, अलबता कुछ जनता को सारे समय के लिए बेवकूफ बनाया जा सकता है। आप ठण्डे दिल से बातें सुनेंगे तो अपनी सरकार की बढ़ती बदनामी का कारण समझ कर उसका उपाय भी कर सकेंगे। अन्य प्रान्तों में जीत हुई और हरियाणा में दो-तीन ही लोकसभा की सीटें जीती तो हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी। मुझे इसकी चिन्ता है।

मेंने स्वयं को अनुपयुक्त (irrelevant) ठीक समझा है तो कृप्या उपाध्यक्ष योजना बोर्ड से मेरा त्याग-पत्र स्वीकार करें। 16.3 89 को योजना बोर्ड की मिटिंग के बाद या 26.3.89 को नूह के उपचुनाव के बाद। यह आपकी मर्जी है। मैं आपको (embarass) अैम्ब्रैस हरगिज नही करना चाहता।

अन्त में एक बार फिर आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आपने मेरी इज्जत-अफज़ाई की। आपको यह भी यकीन दिलाना चाहता हूं कि जिस सांझे मिशन के लिए आपका हमसफ़र बना था, उसकी कामयाबी के लिए जीवन का आखिरी सांस तक लगा दूंगा।

बहुत आदर के साथ, मगर दु:खी साथी।

आपका हमसफ़र

मूलचन्द जैन।

10-3-1989

—०—

downloaded from moolchandjain.org